चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम : 2024-28

समाजशास्त्र विभाग कोर्स करिकुलम

खण्ड-अ : परिचय

पाठ्यक्रम : बैचलर इन आर्ट्स (सर्टिफिकेट / डिप्लोमा / डिग्री / आनर्स)	सेमेस्टर-I	सत्र :2024-25
विषय : समाजशास्त्र		

1	पाठ्यक्रम कोड	SOSC -01
2	पाठ्यक्रम शीर्षक	समाजशास्त्र का परिचय (INTRODUCTION TO SOCIOLOGY)
3	पाठ्यक्रम का प्रकार	DSC डिसिप्लिन स्पेसिफिक कोर्स
4	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो तो)	कार्यक्रम अनुसार
5	लर्निंग आउटकम (CLO)	कोर्स पूरा होने के बाद विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम हो सकेंगे- • पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को समाजशास्त्र की सभी प्रमुख अवधारणाओं को शामिल करने के लिए डिज़ाइन किया गया है यह विद्यार्थी के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करेगा। • पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में समाजशास्त्रीय ज्ञान की गहरी अंतर्दृष्टि विकसित करने में सक्षम बनाएगा। • पारिवारिक विवाह, नातेदारी जैसी भारतीय सामाजिक संस्था की अवधारणा छात्रों को कई समस्याओं को हल करने में उनकी भूमिका पर विचार करने में सक्षम बनाएगा। • वैश्वीकरण और मीडिया साम्राज्यवाद की अवधारणा छात्रों को वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य को वैचारिक रूप से समझने में सक्षम बनाएगी। • सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा छात्रों को विभिन्न पीढ़ीगत अंतर की अवधारणा को बेहतर ढंग से समझाएगी और इसके दुष्प्रभाव से अवगत करायेगी।
6	क्रेडिट महत्व	04 — क्रेडिट = 15 घण्टे का अध्ययन/प्रशिक्षण/पर्यवेक्षण
7	कुल अंक :	अधिकतम अंक :100 — न्यूनतम उत्तीर्ण अंक : 40

खण्ड-ब : कोर्स की विषय-वस्तु

कुल अध्यापन कालखण्ड (1 घण्टा प्रति कालखण्ड) 60 कालखण्ड (60 घण्टे)

इकाई	विषय-वस्तु	कुल कालखण्ड की संख्या
इकाई-I समाजशास्त्र का परिचय	1. समाजशास्त्र का अध्ययन एक विषय के रूप में अर्थ, उद्भव एवं विषय क्षेत्र । 2. समुदाय, समाज, संस्था और समिति । 3. अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध-अर्थशास्त्र,मनोविज्ञान, राजनीति । 4. प्रस्थिति एवं भूमिका की अवधारणा ।	15
इकाई- II सामाजिक संस्थाएँ	1. व्यक्ति और समाज के बीच अंतःसंबंध । 2. समाजीकरण की प्रक्रिया एवं महत्व । 3. परिवार, विवाह और नातेदारी की अवधारणा । 4. संस्कृति एवं सभ्यता के बीच परस्पर संबंध ।	15
इकाई-III सामाजिक प्रक्रियाएँ	1. सहयोग,प्रतिस्पर्धा,संघर्ष की अवधारणा । 2. जाति और वर्ग:अवधारणा और समालोचना । 3. सामाजिक नियंत्रणः विशेषताएं एवं प्रभाव । 4. औद्योगिकरण एवं इसके प्रभाव ।	15
इकाई- IV सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक परिवर्तन	1. सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा । 2. सामाजिक स्तरीकरण के कारक । 3. सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा । 4. समाजिक परिवर्तन के प्रकार ।	15

हस्ताक्षर, सदस्य एवं संयोजक (केन्द्रीय अध्ययन मंडल)

10.6.2024 डॉ. अभिलाषा गढ़ेवाल Dr. V.K. Ramteke 10.6.24 सपना 10.06.24 10.6.24

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम : 2024-28

समाजशास्त्र विभाग कोर्स करिकुलम

खण्ड-अ : परिचय

कार्यक्रम: बैचलर इन आर्ट्स (सर्टिफिकेट / डिप्लोमा / डिग्री / आनर्स)	सेमेस्टर -II	सत्र :2024-25

विषय : समाजशास्त्र

1	पाठ्यक्रम कोड	SOSC-02	
2	पाठ्यक्रम शीर्षक	भारत में परिवर्तनशील सामाजिक संस्थाएँ (Changing Social Institutions in India)	
3	पाठ्यक्रम का प्रकार	DSC डिसिप्लिन स्पेसिफिक कोर्स	
4	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो तो)	कार्यक्रम अनुसार	
5	लर्निंग आउटकम (CLO)	**कोर्स पूरा होने के बाद विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम हो सकेंगे-** • विद्यार्थीयों को भारतीय समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी होगी। • विद्यार्थी भारतीय सामाजिक संरचना के पूर्व एवं वर्तमान स्थिति से परिचित होगें। • यह पाठ्यक्रम भारतीय समाज के प्रमुख मुद्दों को समझने में सहायक होगा। • यह पाठ्यक्रम ग्रामीण संरचना, विकास और मुद्दों की ज़ानकारी होगी। • विद्यार्थी भारत की सामाजिक समस्याओं की जानकारी होगी।	
6	क्रेडिट महत्व	04	क्रेडिट = 15 घण्टे का अध्ययन/प्रशिक्षण/पर्यवेक्षण
7	कुल अंक :	अधिकतम अंक :100	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक : 40

खण्ड-ब : कोर्स की विषय-वस्तु

कुल अध्यापन कालखण्ड (1 घण्टा प्रति कालखण्ड) 60 कालखण्ड (60 घण्टे)

इकाई	विषय-वस्तु	कुल कालखण्ड की संख्या
इकाई-I प्राचीन भारत : समाज एवं परिवर्तन	1. प्राचीन भारतीय समाज और परिवर्तन 2. आश्रम, पुरुषार्थ 3. कर्म: पूर्व और वर्तमान की स्थिति 4. जाति और वर्ण की अवधारणा	15
इकाई-II भारतीय सामाजिक संरचना में परिवर्तन	1. परिवार की अवधारणा और इसकी बदलती प्रकृति 2. विवाह और उसकी चुनौतियाँ 3. नातेदारी: सिद्धांत और स्वरूप 4. जजमानी और कृषक संबंध	15
इकाई-III ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था	1. ग्रामीण विकास और परिवर्तन 2. ग्रामीण प्रवासन एवं शहरीकरण 3. ग्रामीण समाज में धार्मिकता एवं अंधविश्वास 4. कृषकों की समस्याएँ	15
इकाई-IV भारत में सामाजिक मुद्दे	1. गरीबी और बेरोजगारी : कारण एवं निदान 2. भ्रष्टाचार की समस्या : कारण एवं निदान 3. नशीने पदार्थों का सेवन : प्रकार कारण और निवारण 4. साइबर अपराध के प्रकार: कारण एवं निदान	15

हस्ताक्षर, सदस्य एवं संयोजक (केन्द्रीय अध्ययन मंडल)

(1) 10.6.24 10.6.24 कल्पना
(2)
(3)
(4) 10.6.24
(5)
(7)

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम प्रश्न-पत्र

जनजातीय समाज का समाजशास्त्र

(SOCIOLOGY OF TRIBAL SOCIETY)

अध्याय

1. **जनजाति : अवधारणा, विशेषताएं, जनजाति तथा जाति...**
[TRIBE : CONCEPT, CHARACTERISTICS, TRIBE AND CASTE]
[जनजति का अर्थ एवं परिभाषाएं ● अनुसूचित जनजाति की अवधारणा ● जनजाति की सामान्य विशेषताएं ● जनजाति एवं जाति में समानताएं एवं अन्तर।]

2. **जनजातीय लोगों का वर्गीकरण .....**
[CLASSIFICATION OF TRIBAL PEOPLE]
[छत्तीसगढ़ की जनजातियां ● वर्ष 2011 की जनगणना में छत्तीसगढ़ की जिलेवार जनसंख्या ● छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजातियां एवं प्रमुख क्षेत्रों में जनजातियों का वितरण ● भारत में जनजातियों का भौगोलिक वर्गीकरण ● जनजातियों का सांस्कृतिक वर्गीकरण।]

3. **जनजातीय लोगों का आर्थिक वर्गीकरण : शिकारी, खाद्य संग्राहक, घुमन्तू, स्थानान्तरित खेतिहर, कृषक तथा दस्तकार जनजातियां .....**
[ECONOMIC CLASSIFICATION OF TRIBAL PEOPLE : HUNTERS, FOOD GATHERER, NOMADS, SHIFTING CULTIVATERS, PEASANTS AND ARTISANS]
[अर्थव्यवस्था क्या है? जनजातीय आर्थिक संगठन की सामान्य विशेषताएं ● जनजातियों में जीवन-यापन के प्रतिमान ● जनजातियों में आर्थिक विकास के प्रमुख स्तर—शिकारी एवं खाद्य संग्राहक जनजातियां ● पशुपालक जनजातियां ● कृषक जनजातियां (स्थानान्तरित कृषक एवं स्थायी कृषक) ● कारीगर अथवा दस्तकार जनजातियां ● श्रमिक जनजातियां।]

4. **जनजातियों का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य .....**
[SOCIO-CULTURAL PROFILE OF TRIBES]
[जनजातियों का सामाजिक परिदृश्य—सामाजिक संगठन, सामाजिक स्तरीकरण तथा स्त्रियों की प्रस्थिति ● जनजातियों का सांस्कृतिक परिदृश्य—धार्मिक विश्वासों की भिन्नता, टोटमवाद, व्यवहार के निषेध, जनजातीय गाथाएं तथा लोककथाएं]

5. **जनजातियों में नातेदारी.....**
[KINSHIP AMONG TRIBES]
[नातेदारी व्यवस्था का अर्थ ● नातेदारी के प्रकार ● नातेदारी की श्रेणियां ● नातेदारी संज्ञाएं—वर्गीकृत तथा विशिष्ट ● नातेदारी की रीतियां—परिहार, परिहास सम्बन्ध, माध्यमिक सम्बोधन, मातुलेय, पितृ-भगिनी अधिकार तथा सहकष्टी ● नातेदारी का सामाजिक महत्व।]

6. **जनजातीय विवाह .....**
[TRIBAL MARRIAGE]
[विवाह का अर्थ तथा परिभाषा ● विवाह के उद्देश्य तथा प्रकार्य ● जनजातियों में विवाह सम्बन्धी नियम एवं निषेध ● जनजातियों में विवाह के प्रकार—एकविवाह, बहुपत्नी विवाह तथा बहुपति विवाह ● जनजातियों में जीवन-साथी के चुनाव की पद्धतियां ● जनजातियों में अधिमान्य विवाह ● पूर्व वैवाहिक तथा अतिरिक्त वैवाहिक यौन सम्बन्ध।]

Scanned with OKEN Scanner

7. **जनजातीय परिवार** .....
[TRIBAL FAMILY]
[परिवार का अर्थ तथा परिभाषा ● जनजातीय परिवार की विशेषताएं ● परिवार की उत्पत्ति के सिद्धान्त ● जनजातीय परिवार के प्रकार ● परिवार के प्रकार्य अथवा महत्व।]

8. **जनजातीय धर्म, विश्वास एवं सांस्कृतिक परम्पराएं** .....
[TRIBAL RELIGION, BELIEFS AND CULTURAL TRADITIONS]
[धर्म का अर्थ तथा परिभाषाएं ● जनजातियों में धार्मिक विश्वास एवं व्यवहार ● जनजातीय धर्म की विशेषताएं ● जनजातियों में धर्म के सामाजिक प्रकार्य ● जनजातियों की सांस्कृतिक परम्पराएं—टोटम, निषेध या टैबू, युवागृह, जनजातीय लोककथाएं।]

9. **जनजातियों में गतिशीलता एवं उभरती संवेदनशीलता** .....
[MOBILITY AND EMERGING SENSITIZATION IN TRIBES]
[सामाजिक परिवर्तन तथा गतिशीलता की अवधारणा ● जनजातियों में उत्पन्न सामाजिक गतिशीलता—औपनिवेशिक शासन, हिन्दूकरण तथा परसंस्कृति-ग्रहण का प्रभाव ● सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन ● जनजातियों में संवेदनशीलता की प्रकृति—जनजातीय एकीकरण एवं दृढ़ीकरण।]

10. **जनजातीय विकास की योजनाएं** .....
[SCHEMES OF TRIBAL DEVELOPMENT]
[स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में जनजातीय विकास ● जनजातियों का संवैधानिक संरक्षण ● जनजातीय विकास के विशेष कार्यक्रम ● छत्तीसगढ़ में जनजातीय विकास के विशेष कार्यक्रम—शैक्षणिक, रोजगार सम्बन्धी, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी प्रयत्न।]

11. **विभिन्न जनजातीय आन्दोलन** .....
[VARIOUS TRIBAL MOVEMENTS]
[जनजातीय आन्दोलन का अर्थ एवं विशेषताएं ● औपनिवेशिक काल में जनजातीय आन्दोलन ● भारत में प्रमुख जनजातीय आन्दोलन—विरोधपूर्ण आन्दोलन, सुधारवादी आन्दोलन, राजनीतिक आन्दोलन, पृथकतावादी आन्दोलन, एकतावादी आन्दोलन ● जनजातीय आन्दोलनों के कारण एवं परिणाम।]

12. **जनजातीय समस्याएं : निर्धनता, निरक्षरता, ऋणग्रस्तता तथा खेतिहर मुद्दे** .....
[TRIBAL PROBLEMS : POVERTY, ILLITERACY, INDEBTEDNESS AND AGRARIAN ISSUES]
[जनजातीय समस्याओं पर विभिन्न दृष्टिकोण ● जनजातीय समस्याओं के कारण ● जनजातियों में निर्धनता की समस्या की प्रकृति, कारण तथा दुष्परिणाम ● निरक्षरता की समस्या ● ऋणग्रस्तता की समस्या, कारण तथा परिणाम ● खेतिहर मुद्दों से सम्बन्धित समस्याएं—भूमि पृथक्करण, विस्थापन एवं प्रव्रजन की समस्या ● जनजातीय समस्याओं के विशिष्ट उपचार ● जनजातीय समस्याओं के निराकरण के सुझाव।]

13. **छत्तीसगढ़ में जनजातीय शोषण का अध्ययन एवं असुरक्षित जनजातीय समूहों के लिए सुधार-प्रयत्न** 1
[EXPLOITATION STUDIES OF TRIBES IN CHHATTISGARH AND REFORM MEASURES TO PARTICULARLY VULNERABLE TRIBAL GROUPS—PVTGs]
[आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक शोषण ● नक्सली आतंक, वन-नीति तथा विस्थापन से उत्पन्न शोषण ● महिलाओं का शोषण ● जनजातीय पहचान का संकट। छत्तीसगढ़ में असुरक्षित जनजातीय समूह ● विशेष रूप से असुरक्षित जनजातीय समूहों के सुधार और विकास के लिए छत्तीसगढ़ में प्रयत्न।]

Scanned with OKEN Scanner

द्वितीय प्रश्न-पत्र

अपराध एवं समाज
(CRIME AND SOCIETY)

1. **अपराध की अवधारणा : अर्थ, विशेषताएं एवं प्रकार** .....
[CONCEPT OF CRIME : MEANING, CHARACTERISTICS AND TYPES]
[अपराध की कानूनी अवधारणा ● अपराध की समाजशास्त्रीय अवधारणा ● अपराध के प्रकार ● अपराधों का सामान्य वर्गीकरण ● अपराधियों का वर्गीकरण।]

2. **अपराध के सम्प्रदाय : शास्त्रीय, समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक** .....
[SCHOOLS OF CRIME : CLASSICAL, SOCIOLOGICAL AND PSYCHOLOGICAL]
[अपराध की शास्त्रीय व्याख्या—सुखवादी, प्ररूपवादी एवं भौगोलिक अपराध के समाजशास्त्रीय सिद्धान्त—सामाजिक संरचना, अपराधिक उपसंस्कृति तथा विभिन्नतायुक्त सहचर्य का सिद्धान्त ● अपराध की मनोवैज्ञानिक व्याख्या ● अपराध के सामान्य कारण।]

3. **सामाजिक संरचना तथा नियमहीनता** .....
[SOCIAL STRUCTURE AND ANOMIE]
[इमाइल दुर्खीम के सन्दर्भ में नियमहीनता का अर्थ ● सामाजिक संरचना तथा अपराध में सम्बन्ध ● नियमहीनता पर राबर्ट मर्टन के विचार ● सांस्कृतिक लक्ष्य तथा संस्थागत प्रतिमान ● व्यक्तिगत अनुकूलन के प्रकार।]

4. **अपराधिता एवं आत्महत्या** .....
[CRIMINALITY AND SUICIDE]
[आत्महत्या का अर्थ तथा प्रकृति ● भारत में आत्महत्याएं ● आत्महत्या के सिद्धान्त—मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय ● आत्महत्या के सामान्य कारण ● आत्महत्या की रोकथाम।]

5. **संगठित अपराध** .....
[ORGANISED CRIMES]
[संगठित अपराध का अर्थ तथा परिभाषा ● संगठित अपराध की विशेषताएं ● अपराधी संगठनों के प्रकार ● भारत में संगठित अपराध के विभिन्न रूप।]

6. **श्वेतवसन अपराध** .....
[WHITE-COLLAR CRIME]
[श्वेतवसन अपराध का अर्थ, परिभाषाएं एवं विशेषताएं ● अपराध तथा श्वेतवसन अपराध में अन्तर ● श्वेतवसन अपराध के मुख्य रूप ● श्वेतवसन अपराध के कारण ● श्वेतवसन अपराध के परिणाम ● श्वेतवसन अपराधों को रोकने के सुझाव।]

7. **साइबर अपराध** .....
[CYBER CRIME]
[साइबर अपराध क्या है? साइबर अपराध के उद्देश्य ● साइबर अपराध के विभिन्न प्रकार ● कम्प्यूटर अपराधों को रोकने के विभिन्न उपाय।]

8. **सामाजिक कुकृत्य एवं अपराध : मद्यपान तथा मादक द्रव्य-व्यसन** .....
[SOCIAL EVILS AND CRIME : ALCOHOLISM AND DRUG ADDICTION]
[सामाजिक कुकृत्य तथा अपराध में सम्बन्ध ● मद्यपान का अर्थ ● मद्यपान एक समस्या के रूप में ● मादक द्रव्य-व्यसन का अर्थ तथा समस्या की प्रकृति ● मादक द्रव्य-व्यसन के कारण ● मादक द्रव्य-व्यसन के दुष्परिणाम ● समस्या के समाधान हेतु सुझाव ● भारत में नशा-निषेध।]

9. **दहेज प्रथा की समस्या** .....
[PROBLEM OF DOWRY]
[दहेज का वास्तविक अर्थ एवं वर्तमान रूप ● दहेज प्रथा के कारण ● समाज पर दहेज के कुप्रभाव ● समस्या के निराकरण के लिए सरकार के प्रयत्न ● सुझाव।]

Scanned with OKEN Scanner

10. भिक्षावृत्ति .....
[BEGGARY]
[भिक्षावृत्ति का अर्थ, भिक्षुकों के विभिन्न प्रकार ● भिक्षावृत्ति एक व्यवसाय के रूप में ● भिक्षावृत्ति के कारण ● भिक्षावृत्ति के उन्मूलन के प्रयत्न ● भिक्षावृत्ति को रोकने के सुझाव।]

11. दण्ड : अर्थ, विशेषताएं, उद्देश्य एवं प्रकार .....
[PUNISHMENT : MEANING, CHARACTERISTICS, OBJECTIVES AND TYPES]
[दण्ड का अर्थ एवं विशेषताएं ● दण्ड के उद्देश्य ● दण्ड के विभिन्न प्रकार—मृत्यु दण्ड, शारीरिक यातना, सामाजिक बहिष्कार, देश निकाला, कारावास, आर्थिक दण्ड एवं क्षतिपूर्ति।]

12. दण्ड के प्रमुख सिद्धान्त .....
[MAJOR THEORIES OF PUNISHMENT]
[दण्ड के सिद्धान्त—प्रायश्चित का सिद्धान्त, प्रतिशोध का सिद्धान्त, प्रतिरोध या भय का सिद्धान्त ● सुरक्षा अथवा निरोध का सिद्धान्त ● सुधार का सिद्धान्त ● दण्ड का सर्वाधिक उपयुक्त सिद्धान्त।]

13. सुधारात्मक प्रक्रिया : भारत में बन्दीगृह-सुधार का विकास .....
[CORRECTIONAL PROCESS : DEVELOPMENT OF JAIL REFORMS IN INDIA]
[सुधारात्मक प्रक्रिया का तात्पर्य ● बन्दीगृह का अर्थ एवं प्रकृति ● बन्दीगृह के उद्देश्य ● बन्दीगृह-सुधार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ● भारत में बन्दीगृह-सुधार के प्रयत्न ● छत्तीसगढ़ में बन्दीगृह-सुधार ● खुले बन्दीगृह ● बन्दीगृह-सुधार के सुझाव।]

14. आधुनिक सुधारात्मक अवधारणाएं : प्रोबेशन तथा पैरोल .
[MODERN CORRECTIONAL CONCEPTS : PROBATION AND PAROLE]
[प्रोबेशन अथवा परिवीक्षा का अर्थ एवं विशेषताएं ● प्रोबेशन अधिनियम, 1958 ● प्रोबेशन अधिकारी की भूमिका ● प्रोबेशन प्रणाली की उपयोगिता तथा दोष ● पैरोल—अर्थ तथा विशेषताएं ● पैरोल की प्रमुख शर्तें ● पैरोल के लाभ तथा दोष ● प्रोबेशन तथा पैरोल में अन्तर।]

15. उत्तर संरक्षण कार्यक्रम .....
[AFTER CARE PROGRAMME]
[उत्तर संरक्षण सेवाओं का अर्थ ● भारत में उत्तर संरक्षण कार्यक्रम ● उत्तर संरक्षण कार्यक्रम की असफलता के कारण ● उत्तर रक्षा कार्यक्रम की सफलता के सुझाव ● बाल न्यायालय ● प्रतिप्रेक्षण गृह ● किशोर गृह।]

16. भारत में पुलिस तथा न्यायपालिका की भूमिका .....
[ROLE OF POLICE AND JUDICIARY IN INDIA]
[पुलिस का अर्थ तथा विशेषताएं ● ऐतिहासिक प्रकृति एवं संरचनात्मक संगठन ● पुलिस की भूमिका अथवा प्रकार्य ● पुलिस की असफलता के कारण सफलता हेतु सुझाव। भारत में न्यायपालिका की भूमिका—भारत में न्यायिक संरचना ● न्यायपालिका की भूमिका अथवा कार्य ● न्यायपालिका की भूमिका का मूल्यांकन।]

Scanned with OKEN Scanner

NEW SYLLABUS

समाजशास्त्र : तृतीय वर्ष

PAPER-I—FOUNDATIONS OF SOCIOLOGICAL THOUGHT

Unit I **August Comte** : The Law of Three Stages, Positivism, Hierarchy of Science.
Durkheim : Social Solidarity and Suicide.

Unit II **Karl Marx** : Dialectic Materialism, Class Struggle and Surplus Value.
Max Weber : Bureaucracy, Authority and Protestant Ethic and the spirit of Capitalism.

Unit III **Pareto** : Circulation of Elites and Logical and Non-logical action.
Spencer : Social Darwinism, Social Organic Evolutions.

Unit IV **Torstein Veblen** : The Theory of Leisure Class, Theory of Social Change.
R.K. Morton : Functionalism and Reference Group.

Unit V **Development of Sociological Thought in India :**
Mahatma Gandhi : Ahimsa, Satya Graha and Trusteeship.
Radha Kamal Mukherjee : The Concept of Value.

PAPER-II—METHODS OF SOCIAL RESEARCH

Unit I **Social Research** : Meaning, Characteristics and Significance. Scientific methods, Hypothesis.

Unit II **Qualitative Research** : Ethnography, Observation, Case Study, Content Analysis.

Unit III **Research Design** : Exploratory, Descriptive, Explanatory, Experimental and Diagnostic.

Unit IV **Tools and Techniques of Social Research** : Social Survey, Sampling, Questionnaire, Interview-Schedule and Interview-Guide.

Unit V **Social Statistics** : Meaning, Importance and Limitations.
Graphs, Diagrams and Measures of Central Tendency, Mean, Mode, Median, Co-relation, Use of Computer in Social Research.

Scanned with OKEN Scanner